P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-5* ISSUE-1* September- 2017
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

पं. विद्यानिवास मिश्र की निबंध शैली

सुलछणा तिवारी
शोध छात्रा,
हिन्दी विभाग,
वर्धमान विश्वविद्यालय,
वर्धमान, प० बं०

सारांश

पं. विद्यानिवास मिश्र हिन्दी निबंध साहित्य के एक प्रतिष्ठित निबंधकार है। निबंध ही उनका स्वभाव है। उनकी लेखनी ने निबंध विधा को प्रतिष्ठा प्रदान की है। निबंध साहित्य के विकास पर दृष्टिपात करने पर हम पाते हैं कि भारतेन्दु युग से लेकर आधुनिक युग तक निबंधों के विकास की परम्परा अनवरत चली आ रही है। आधुनिक युग में ललित निबंध परम्परा का विकास होता है। यद्यपि इसके बीज भारतेन्दु युग में ही अंकुरित हो चुके थे। आधुनिक युग के निबंधकार आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, विद्यानिवास मिश्र विवेकी राय, कुबेरनाथ राय आदि ललित निबंध परम्परा को उत्कर्श तक पहुँचाते है। इस परम्परा में आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के बाद प. विद्यानिवास का नाम आता है। द्विवेदी जी ने भारतीय परम्परा प्रकृति, सौंदर्य एवं सांस्कृतिक बोध का समन्वय अपने निबंधों मे दर्षाया है। उसी परम्परा को आगे बढ़ाने एवं उसकी प्रकृति और विकास का कार्य पं. विद्यानिवास मिश्र ने अपने निबंधों द्वारा किया है। मिश्रजी ने ललित निबंधों का अपना संसार रचा है। मिश्रजी द्वारा ललित निबंधों की संख्या सर्वाधिक है। निबंध रचना को लेकर मिश्रजी का चिन्तन बहुआयामी है।

यही कारण है कि भाषा और शैली का उनके निबंधो में विशेष स्थान है। शैली निबंधों के प्राणतत्व है। मिश्रजी की भाषाषैली है वो काव्यमय भाषा से सम्बधीत है। शब्दों एवं भावो की मिठास एवं उनकी मधुर शैली ने उनके निबंधो को पाठकों के रूची के अनुरूप बना दिया है। निबंधो के भावो के अनुरूप ही उन्होने शैली का प्रयोग किया है।

मुख्य शब्द : ललित भावात्मक शैली, वर्णनात्मक शैली, विवरणात्मक शैली, विचारात्मक शैली, हास्यव्यंग्यात्मक शैली, धारा शैली, विक्षेप शैली, पत्रात्मक शैली, अलंकारिक शैली।

प्रस्तावना

निबंध एक छोटी गद्य रचना होती है, जिसमें साहित्यकार का निजीपन झलकता है। यह एक ऐसी विधा है जिसमें व्यक्ति अपनी अनुभूति को सहजता के साथ व्यक्त करता है। निबंध हमारी विचारधारा, हमारी सोच समाज के प्रति हमारे दृष्टिकोण और हमारी भाषा इन सबके मौलिकता के दर्पण होते है। निबंध साहित्य में शैली का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। निबंध में शैली के वैषिश्टय को रेखांकित करते हुए डॉ. जयनाथ नलिन ने लिखा है.... "शैली की सबसे बड़ी परख है निबन्ध। निबन्ध में शैली साहित्य के अन्य रूपों की अपेक्षा सबसे अधिक स्वस्थ आकार ग्रहण करती है। शैली ही निबन्धों को प्राणवान बनाती है, उसे व्यक्तित्व प्रदान करती है। शैलीगत विशेषता के कारण ही निबन्धकार लेखकों की भीड़ में पहचाना जा सकता है। बात सभी कहते है; तब क्यो एकही कलेजे में बैठती है और एक ही कानों में भी नहीं? एक की बात सुन गुदगुदी के घुँघरू बज उठते हैं, एक की बात से आँखो का आलस्य भी नहीं उतरता? बात के कहने का ढंग है– यही है शैली। बात में चमत्कार हो तो क्यों न भाये, नुकीलापन हो तो कलेजे मे क्यों न घुसे, रस हो तो प्यारी क्यों न लगे? यही कहने का ढंग निबन्ध का सबसे बड़ा बल है। शैली ही फोर्स है और शैली ही गतिशीलता।"[1]

अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत प्रपत्र का उद्देश्य पं. विद्यानिवास मिश्र के निबंध शैली का मूल्यांकन करना है।

मनुश्य द्वारा किसी भी कार्य को करने का उसका अपना एक ढंग होता है। एक ही कार्य करने की प्रत्येक व्यक्ति की अपनी अलग अलग शैली होती है। साहित्यचार्यी ने शैली के लिए 'वृत्ति और रीति' शब्द का प्रयोग किया है। शैली शब्द महाभाश्य में एशांहि आर्चस्य शैली लक्ष्यते आता है। किन्तु हम आज जिस

अर्थ में शैली शब्द का प्रयोग करते है उस अर्थ में संस्कृति साहित्य में प्रयोग नहीं हुआ, अंग्रेजी साहित्य के सम्पर्क में आने के बाद हम बहुत से पुराने शब्दो को नये अर्थो में प्रयुक्त करने लगे है और उनमें भी ध्वनि साम्यता से आकर्षित होने के उदाहरण भी कम नही है।

डॉ. श्यामसुन्दर दास शैली को 'रचना चमत्कार' के नाम से अभिहीत करते है। वाक् और षक्ति की भाँति संयुक्त जगत् के माता–पिता पार्वती और परमेष्वर की वंदना इसलिए करता हूँ कि इसके वाक् और षक्ति की प्रतिपत्ति हो। वहाँ वाक् और षक्ति से यही प्रयोजन है जो कला पक्ष और भाव पक्ष अथवा भाव और शैली से है। इसलिए रचना चमत्कार की शैली नाम दिया जाता है।"

पंडित विद्यनिवास मिश्र और उनके निबन्धी के संदर्भ मे जब हम विचार करते है तो पाते है कि मिश्रजी हिन्दी व्यक्ति व्यंजक परम्परा मे अपनी शैली वैषिश्टय के कारण उच्चआसन पर विराजमान है। मिश्रजी के निबंधो में विशय की ताजगी, निबन्ध और निबन्ध संग्रहो के शीर्षक में काव्यात्मकता लयात्मकता, वार्तालाप पध्दति, वैदुश्य के साथ रसात्मकता देखा जा सकता है जो रचनाकार को नित्य नवीन बनाये रखता हैं मिश्र जी के निबन्धों मे विद्वानो द्वारा स्वीकृत विभिन्न निबन्ध षैलियो कां प्रयोग सहज रूप में मिलता है।

विषय

निबन्ध मे शैली तत्व का असाधारण महत्व है; वास्तव मे शैली लेखक के व्यक्तित्व का प्रबल पक्ष है। जो उसकी अभिव्यक्ति को जीवन्त एवं सशक्त बनाने में सहायक होती है। शैली के माध्यम से निबन्ध में स्वयं निबन्धकार बोलता है। विद्यानिवास मिश्रजी के निबन्ध साहित्य के परीप्रेक्ष मे उनकी निबन्ध शैली का वर्गीकरण अपेक्षित है। मिश्रजी के निबन्धों में विभिन्न शैलीया देखेंगे।[2]

1. ललित–भावात्मक शैली
2. वर्णानात्मक शैली
3. विवरणात्मक शैली
4. विचारात्मक शैली
5. हास्य–व्यंग्य शैली

ललित या भावात्मक शैली संयुक्त निबन्ध की भाषा गीत के समान लयबध्द छन्दोमय कभी अस्पश्ठ कभी बिखरी हुई कभी वार्तालाप के समान होती है। आत्मीयता उसका विशेष गुण है। भावों का द्रुत प्रवाह रचनाकार को अपने साथ बहा ले जाता है। भाषा में भावों के अनुकूल ही चंचलता, प्रवाह, वेग उद्‌मता आ जाती है। भाषा में लय लालित्य भावो के कारण ही उपस्थित होते हैं बुध्दि और तर्क का स्थान ऐसी रचनाओं में कम ही रहता है। किन्तु भावात्मक शैली केवल भाषा का स्वछन्द रूप ही नही है बल्कि एक भावुक हृदय का आत्म निवेदन है। वैयक्तिक निबन्ध भी इसी शैली के अन्तर्गत ही आते है। यह शैली पाठको को अपने अपने अस्तित्व से अलग कर लेखक के व्यक्तित्व में विलीन कर देती है। लेखक पाठक के तल्लीनता ही इस शैली की विशिष्टता है।

पंडित विद्यानिवास मिश्र ने मुख्यतः ललित निबन्ध लिखे है। छितवन की छाँह, कदम की फूली डाल, तुम चन्दन हम पानी, आँगन का पंछी और बनजारा मन, मेरे राम का मुकूट भींग रहा है, अग्निरथ, तमाल के झरोखे से, बसन्त आ गया पर कोई उत्कश्ठा नही, मैने सिल पहुँचाई, भ्रमरानन्द के पत्र, गिर रहा है आज पानी, गाँव का मन, आदि निबन्ध संग्रहो के कई निबन्धो का मूल धरातल भावात्मक है।

"यह भावात्मकता एक बहुत बड़ा परिवेष घेर लेती है अतः प्राकृतिक उत्पादनों से लेकर सामाजिक समस्यांओ तक और छितवन भी अनदेखे छाँह से लेकर षंकरगढ़ की सिल तक अनेक छोटी मोटी बाते उनकी भावनाओं के रंग में रंगकर निबन्धों में उपस्थित हो जाती है। इन निबन्धों में खुलती जाती है एक बुध्दिमान, परिस्कृत रूचि के एवं स्वस्थ दृष्टि वाले निबन्धकार भी वह आत्मा जो देष की सोंधी गंध वाली मिट्‌टी से बेहद प्यार करती है। सामान्य जन जीवन के विविध सांस्कृतिक पक्षों को अन्तिम पर्त तक जानती है, संस्कृति और परम्पराओं का दाय श्रध्दानवत होकर स्वीकार करती है, इतिहास का नया अर्थ ढूँढ़ती है, देष–विदेष के साहित्य का मर्म पहचानती है और नर–नारायण पर समान रूप से श्रध्दा रखती है।"[3]

छितवन की छाँह, हर सिंगार, टिकोरा, होरहा, कटहल, आम्र मंजरी, आँगन का पंछी, ये विपथगाएँ, फूल और पात इत्यादि सारे पं. विद्यानिवास मिश्र के लिए केवल प्रकृति के विभिन्न रूप नहीं, ये अनेक भाव–भावनाओं के जागृत प्रतीक बन जाते है।

वर्णनात्मक शैली में लेखक किसी स्थान या घटना का वर्णन बड़े ही सजीवता एवं सहजता के साथ करता है। कल्पना के लिए इसमें कम जगह होती है। निबन्धकार वस्तुओं या घटनांओ का वर्णन आत्मीयता पूर्ण करता है। मुख्यतः सरस कल्पना तथा सरल भाषा का सहारा लेकर हर रोज दिखाई देने वाले सर्व परिचित साधारण विशयों को रोचक आकर्शक एवं नये ढंग से प्रस्तुत करना ही इस शैली का कार्य होता है। मिश्रजी के निबन्धों में वर्णनात्मकता के दर्षन यत्र तत्र होते रहते है। यथा "अमरकण्टक की सालती स्मृति नामक निबन्ध में वो लिखते है कि संध्या समय हम लोग सदल बल नर्मदा कुण्ड में तन–मन की तपन बुझाने उतरे। कुण्ड के बीच दो–तीन मन्दिर है और उनमें षिव प्रतिश्ठापित है और कहा जाता है कि यह कुण्ड़ ही नर्मदा का आदि स्त्रोत है, जिसके अन्दर से नर्मदा निकलकर कुछ दूर तक लुप्त होकर पुनः नियमित रूप से बहने लगती है। कुण्ड के पार्ष्व में अनेक मन्दिर है जो प्रायः सभी कल्चूरी राजाओ के बाद बनवाए हुए है। कुछ दुर पर पातालेष्वर मन्दिर कुलचुरि राजा कर्ण–देव का बनवाया हुआ है, जो स्थापत्य में खजुराहों के मन्दिरो के समकक्ष है।

विवरणात्मक निबन्ध में किसी वृतान्त या किन्ही घटनाओं का वर्णन रहता है। विवरण का अर्थ है वृतान्त, हाल या बयान। इस शैली की मुख्य विशेषता है कथात्मकता इस शैली में कल्पना व अनुमति का सम्मिश्रण रहता है। वर्णनात्मक निबन्धों का मुख्य समबन्ध देस से होता है। जब की विवरणात्मक निबन्धों का संबंध काल से होता है। इस शैली में लेखक घटना चक्र को क्रम बध्द रूप में पाठक के समक्ष रखता है और चित्रण स्थिर न होकर गतिषील होता है। वर्णनात्मक निबन्धों का मानदण्ड़

केवल कूतुहल जागृत करना मात्र है जबकि विवरणात्मक निबन्धों की सफलता की कसौटी कल्पना षक्ति को उत्तेजित कर वर्ण्य वस्तु का चित्रण सजीव कर देना ही है।

'मेरे राम का मुकूट भींग रहा है' निबन्ध मे अमर कटंक की सालती स्मृती निबन्ध में मिश्र जी विन्ध्य की धरती की प्राकृतिक सौन्दर्य का मनोरम विवरण प्रस्तुत करते है। – 'चारो और पहाड़ियों का दुर्ग, जुहिला का क्षीण पानी और निर्मल नीर में रंग बिरंगे उपलो का संगीत और संगीत से समय के षिलीकृत पदचिन्हो को खोजने की प्रेरणा वालु के प्रत्येक कण मे से निकलती हुई धरती ज्येश्ठतम सन्तान विन्धय के इतिहास की स्वर में लहरी की गुँज और कर्मा नृत्य की थकान, अंगडाती हुई साँवली पिंडलियो की रग रग मे नूतन रस की संचार करनेवाली लहरियों की कल रागिनी का आलाप, इन सबमे मनुश्य यदि अपने को घण्टे दो घण्टे भी अर्पण कर दे तो युगो का खोया विष्वास पुन्हः प्राप्त कर सकता है। इसमें रंच मात्र भी संदेह नही। जुहिला की यह उशा नर्मदा के तरंगित यौवन के मध्यम की ओर सोन की उद्वेगनगरी सन्ध्या की नवल भूमिका थी'। [4]

कल्पना, अनुभुति और विचार से मुक्त ये चित्र अत्यंत सजीव बन पड़े है। 'मुकूट मेखला और नूपुर, राश्ट्रपति की छाया, रूपहला धुआँ, कलचुरियों की राजधानी, गुर्गी, रेवा से रीवा, होइहै सिला सब चन्द्रमुखी, विन्धय की धरती का वरदान, निबन्ध मुख्यतः विन्ध्याचल से सम्बन्धित है। इन निबन्धो में वर्णन भी है और विवरण भी।

विचारात्मक शैली मे विचारों की प्रधानता होती है। इस शैली का मुख्य आधार विचार ही है। बुध्दि जब किसी तथ्य का उद्घाटन, विवेचन, तर्क–विर्तक या विष्लेशण द्वारा प्रस्तुत करती है, तो वह विचारात्मक शैली का ही आश्रय लेती है बौध्दिक विवेचन की अधिकता इस शैली का वैशिष्टय है। इसलिए इसे विवेचनात्मक शैली भी कहा जाता है। इस शैली से युक्त निबन्धो की भाषा में कसाव संक्षिप्त का तथा बौध्दिकता होती है।

पंडित विद्यानिवास मिश्र के प्रत्येक निबन्ध विचार प्रधान तो है ही किन्तु जिस अर्थ में विचारात्मक शैली व्यवहृत होती है उस अर्थ में–'नैरन्तर्य और चुनौती' 'संचारिणी' अस्मिता के लिए, बसन्त आ गया पर कोई उत्कण्ठा नहीं, कँटीले तारो के आर पार, मैने सिल पहुँचाई, परम्परा, बन्धन नही आदि संग्रह के निबन्धो को देखा जा सकता है।

साहित्य और संस्कृति मिश्रजी के अध्ययन के मुख्य केन्द्र है, अतः आपके अधिकांश निबन्धो में साहित्य की गंभीर चर्चा मिलती है। जिससे उसके विविध आयाम खुलकर सामने आते है। मिश्रजी की दृश्टी के समस्त भारतीय साहित्य, साहित्य की इकाई है उसे विभक्त करके नही देखना चाहिए।

हास्य व्यंगात्मक शैली मे भाषा और विचार की ताकत सबसे अधिक कारगर सिध्द होती है। इसी शैली का आधार लेकर निबन्धकारों ने व्यक्ति की ओर समश्टि की समस्त बुराइयों दांभिकता की, आडम्बर की, मूर्खता की खाल उधेड़ कर रख दी, विद्यानिवास मिश्र के निबन्धों में व्यंग्य अधिक है हास्य अपेक्षाकृत कम। उनका व्यंग्य पैना, तीखा, तिलमिला देनेवाला आक्रमक है। व्यंग्य के भीतर से उभरते हुए उपहास की निर्ममता एंव कटुता भी जीवन के विविध पक्षों के खोखलेपन को इतनी यथार्थता एवं मार्मिकता के साथ प्रस्तुत करते है कि मन सिहर उठता है।

'भ्रमरानन्द के पत्र' मे अनथहाई गहराई का झूठा दंभ जहाँ भी मिला मिश्रजी ने उसकी बखिया उधेड़ दी, वे षायद महीन चोट करने के पक्ष में नही है। 'कमल भक्षको के देष मे निबन्ध में साहित्य क्षेत्र में गुरूओ पर उनका आक्रमण देखिए 'वे वर्ण को मूलधन मानते है उन्होने दिखलाया है कि छोटी छोटी पुरजियों पर कमलों के पर्याय लिखे हुए है, उनके पीछे अंकगणित मे कुछ हिसाब किया गया है। देखते ही बोले जानते हो तुलीदास मे तू कितनी बार आया है और कितने वर्णो के आगे पीछे आया है? मै अवाक् फिर बोले, अक्षर देवता होता है, जानते हो? मैने कहा, 'गुरू–देवता न होता तो आप' उसे जगाते ही क्यो' गद् गद् होकर बोले, 'शाबाश, तुम पण्डित आदमी हो, ये हमारे पास जो नवयुवक बैठे है, नयी कविता के 'बिम्बविधान पर' शोध करना चाहते है। इनसे मै कहता हूँ; पहले आठ गणों की कविता साधो, फिजुल का विशय छोड़ो, पर इनकी समझ में बात ही नही आती।'' जब मैने बेचारे नवयुवक की दयनीय सूरत देखी तो मुझे लगा कि गुरू की अद्वेत दृष्टि इसे जन्म में मिलने से रही। यह गरीब वर्ण की परमार्थ सत्ता नही पा सकेगा।"[5]

मिश्रजी की निबन्धों मे जिन अन्य शैलियों का प्रयोग हुआ है उनमें से प्रमुख शैलियाँ है। धारा शैली, लेखक के भाव धारा प्रवाह रूप में भाषा षरीर पाकर अभिव्यक्त होती है। पंडित विद्यानिवास मिश्र के भावात्मक निबन्धों में इस प्रकार की शैली के कई उदाहरण मिल जायेंगे। "आम अगर बौरायेगा तो भ्रमरानन्द को भी बैराने का हक हासिल है; पलाश की आँखे मद में चढ़ेंगी तो भ्रमरानन्द को भी नशा करना आता है; दक्षिण पवन में अगर तरूगण झूम सकते है तो भ्रमरानन्द का मूड भी लोहे मे तो जड़ा नहीं है कि हिल भी नही सकता। किसके बाप की ताब है कि भ्रमरानन्द को उत्सव मनाने से रोक सके।"[6]

विक्षेत शैली का अर्थ है विक्षिन्न या बिखरा हुआ स्थिर न रहनां, मन का इधर उधर विचरना। लेखक जब अपने विचारों को बिना तर्क या क्रम या ढंग के मनमाने रूप से रखता है, भावों को स्वच्छन्द रूप से प्रकाषित करता है उन्हे दौड़ने, उडने, विचरने देता है तब वहाँ विक्षेप शैली के दर्शन होते है।

पत्रात्मक शैली मे साहित्यकार किसी व्यक्ति को सम्बोधित करते हुए पत्र लिखता है। वास्तविकता यह होती है कि उसके माध्यम से वह अपने विचारों को अभिव्यक्ति प्रदान करता है, इस शैली का प्रयोग अपने निबन्धो मे किया है। भ्रमरानन्द के पत्र के लगभग सभी निबंध व्यंग्यात्मक होते हुए, पत्रात्मक शैली में ही लिखे गये है। यथा– "सम्पादक जी जय फूलवाद, जय हिप्पी पंथ।

आपने समझा होगा कि भ्रमरानन्द उर्फ मेरी जो राउण्ड अंग्रेजी की भक्ति त्वापी में डूब गये, पर यकीन

मानिए भ्रमरानन्द लिख रहे है। अंग्रेजी का मामला हिन्दुस्तान मे जमता है, बाहर आकर नही जमता, इसलिए जब तक देष के बाहर है, तब तक अंग्रेजी से बस मुलाकात भर रखेंगे, ज्यादा घनिष्ठता बढ़ाने से बड़ा प्रपंच होता है।' पत्रात्मक शैली मे लिखे गए मिश्रजी के निबन्ध उनके निबन्ध संसार की अमूल्य निधि है।[7]

अलंकारिक शैली मिश्रजी के निबधों में उनकी भावुकता एवं रमीणीयता को प्रदर्षित करती है। 'पृथ्वीपर जन्म लेकर जिसको उसके सुनहले फूलों का सौरभ नहीं मिला, उसका जन्म व्यर्थ हैं, जिसने अपने साधन–धाम को आकाश की और निहारते रहने में ही खपा डाला, जिसने वायु की साधना में ही अपनी सॉस को साँसत की, जिसने पंचाग्नि को ही परम पुरूषार्थ माना और जिसने जल–समाधि को ही सबसे बड़ी समाधि मानी, वह पार्थिव कीर्तिके सौरभ से वंचित ही रहा, योगी–यती जाने कितने हुए और उनके नाम भी धूलि में मिल गये, पर जिसने अपने योग की पार्थिव साधना जोड़ा जिसने अपनी समाधि पार्थिव सौन्र्दय में समाहित की, जिसने अपना तप पार्थिव तामको आत्मसात करने में विनियोजित किया, जिसने अपने जीवन–रस में पार्थिव कुसंमो का रस घोला, जिसने अपने शब्द मे पार्थिव रागिनी का स्पन्दन दिया, उसीको पृथ्वी ने यश दिया, उसी को पृथ्वी ने अमृत्व दिया, उसी को पृथ्वी ने अपना वात्सल्य दिया, और उसी को पृथ्वी ने अपने ही नही अपने साथी –संघाती दुसरे महाभूतों के भी बन्धन से मोक्ष दिया"। [8]

आत्म परख शैली व्यक्तिव्यंजन निबन्धों में विशेष है। निबन्धकार विद्यानिवास मिश्र ने अपने निबन्धों मे आत्मपरख शैली का प्रचुर प्रयोग किया है। आँगन के पंछी निबंध में उनका कथन दृश्टयबय है। "मन मे यह आक्रोश आता है पर फिर सोचता हू यह आक्रोश प्रतिगामिता हैं। मुझे धरती और धरती की परम्परा की बात करनी चाहिए, धरती के आनन्द के उत्तराधिकारियों की बात करने पर आनन्दवादी कहा जाता हूँ मेरे एक मार्क्सवादी मित्र ने मुझे यह संज्ञा दे रखी है। पर क्या करूँ, गवार आदमी हूँ: क्या कहने से क्या समझा जायेगा यह जानता ही नही, केवल जब कहे बिना रहा नही जाता तभी कहता हूँ। गौरेयो ने विवश किया, तुलसी ने विवश किया मिनी ने विवश किया तब मुझे कहना पड़ा।"[9]

निष्कर्ष

अंततः कहा जा सकता है कि विद्यानिवास मिश्रजी के निबन्धो में सभी प्रकार की शैलीयों का प्रयोग हुआ है। मिश्रजी के निबन्धों मे व्यास शैली और समास शैली दोनों का प्रयोग है। परन्तु मिश्रजी की रूझान व्यास शैली पर ही अधिक रही है। व्यास शैली और भाषा की प्रसादात्मकता मिश्रजी की अपनी विशिष्टता बन गयी है। पंडित विद्यानिवास मिश्र शैली की दृष्टि से व्यक्तिव्यंजन परम्परा को अधिक समर्थ और सम्पन्न बनाते है। मिश्रजी इस परम्परा को उत्कर्ष पर पहुँचाते है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *विद्यानिवास मिश्र– मेरे राम का मुकूट भींग रहा है,, ... नेशनल पेपरबैक्स नयी दिल्ली 11002, प्रथम संस्करण, 2004*
2. *विद्यानिवास मिश्र– भ्रमरानन्द के पत्र, प्रभात प्रकाशन दिल्ली, प्रथम संस्करण 1981*
3. *विद्यानिवास मिश्र– आंगन का पंछी और बनजारा मन, वाणी प्रकाशन, संस्करण –1997*
4. *विद्यानिवास मिश्र– बसंत आ गया पर कोई उत्कंठा नही, लोकभारती प्रकाशन, द्वितीय संस्करण 1972*

आलोचनात्मक ग्रन्थ

5. *जयनाथ नलिन हिन्दी निबंधकार, आत्माराम एण्ड संस दिल्ली प्रथम संस्करण 1964.*
6. *साहित्य लोचन डॉ. श्यामसुन्दर दास–, बी.ए.एवं रामचन्द्र वर्मा साहित्य रत्नमाला कार्यालय, काषी प्रथम संस्करण 1979*
7. *मु.प. शाहा –हिन्दी निबन्धो का शैलीगत अध्ययन, पुस्तक संस्थान कानपुर : प्र.स. 1973*

पाद टिप्पणी

1. *हिन्दी निबंधकार , डॉ. जयनाथ नलिन,पृष्ठ 29*
2. *साहित्य लोचन : डॉ. श्यामसुन्दर दास ,पृष्ठ 87*
3. *हिन्दी निबंधों का शैलीगत अध्ययन : मु.ब. शाह : पृष्ठ –104*
4. *मेरे राम का मुकूट भींग रहा है। विद्यानिवास मिश्र पृ. 11 / /*
5. *मेरे राम का मुकुट भींग रहा है। विद्यानिवास मिश्र। पृष्ठ–10*
6. *भ्रमरानन्द के पत्र : विद्यानिवास मिश्र, 127,*
7. *आंगन का पंछी और बनजारा मनःविद्यानिवास मिश्र : पृ. 97*
8. *बसन्त आ गया पर कोई उत्कंठा नहीः विद्यानिवास मिश्र ' पृ. 65*
9. *आंगन का पंछी और बनजारा मनःविद्यानिवास मिश्रः पृ. 15*